IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, January 2023

श्रीमद्भगवद्गीता एवं लोक सूचना सम्प्रेषण हेतु मानक

डॉ० सुधांशु कुमार पाण्डेय
सहायक प्रोफेसर (बी०एड० विभाग)
महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,हरदोई, उत्तर प्रदेश, भारत
skpandey.rdc@gmail.com

सारांश

जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रसारित सूचनाओं को जनता त्वरित रूप से, जैसी वे प्रसारित हुई हैं वैसा ही, स्वीकारती है क्योंकि आम जनमानस घटनाओं में निहित क्यों, कब, कैसे, क्या होगा अब? जैसे प्रश्नों का उत्तर जानने हेतु सूचना संचार माध्यमों पर निर्भर होता है। वर्तमान काल में लोक सूचना सम्प्रेषण का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। वर्तमान काल में सूचनाओं का केवल लोक सम्प्रेषण ही नहीं हो रहा अपितु सूचनाओं का निर्माण, उनका स्वहित लाभानुरूप सम्पादन एवं तथ्य गोपन करते हुए सम्प्रेषण किया जा रहा है। वर्तमान परिस्थिति में लोक सूचना सम्प्रेषण हेतु मानकों की अत्यावश्यकता है। श्रीमद्भगवद्गीता का दर्शन लोक सम्प्रेषण के मानकों की स्थापना हेतु अत्यन्त सहायक है। श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दार्शनिक परंपरा में उच्चतम स्थान पर प्रतिष्ठित है। लोक सूचना सम्प्रेषण हेतु क्या मानक होने चाहिए इनका उत्तर भी श्रीमद्भगवद्गीता के तत्व विवेचन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में वर्तमान परिस्थिति में लोक सम्प्रेषण का परीक्षण श्रीमद्भगवद्गीता के तत्व विवेचन द्वारा करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होते हैं कि जनमानस लोकतन्त्र में सम्पूर्ण रूप से शक्तिशाली होते हुए भी सूचना प्राप्ति हेतु सूचना सम्प्रेषण माध्यमों पर निर्भर है, लोक सूचना सम्प्रेषकों को लोक सम्प्रेषण माध्यमों हेतु सम्प्रेषण का भाषा माध्यम जनमानस की भाषा में रखना चाहिए, यथा दृष्ट तथा उद्धृत का पालन लोक सम्प्रेषण हेतु किया जाय। श्रीमद्भगवद्गीता का तत्वान्वेषण लोक सूचना सम्प्रेषण हेतु सन्दर्भ अवश्य दिये जाने एवं लोक सूचना सम्प्रेषण माध्यमों हेतु निर्भीकता एवं निष्पक्षता का मानक निर्धारित करता है।

मुख्य पद– श्रीमद्भगवद्गीता, लोक सूचना सम्प्रेषण, मानक

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-11900A